# प्रयोगशाला विधि

प्रयोगशाला विधि में छात्रों को, व्यक्तिगत प्रदर्शन अनुभवों द्वारा स्वयं तथ्यों से परिचित होने का अवसर दिया जाता है जो ज्ञान प्राप्त करना है उससे सम्बन्धित आवश्यक निर्देश और सामग्री विद्यार्थियों को दे दी जाती है विद्यार्थी, व्यक्तिगत रूप से प्रयोगशाला में प्रयोग करते हैं और प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं, वे सत्य प्रेक्षण निरीक्षण द्वारा विषय वस्तु से सम्बन्धित परिणाम निकालते हैं और, किसी नियम और सिद्धान्त को स्वयं से प्रतिपादन करते हैं

अध्यापक समय समय पर विद्यार्थियों की क्रियाओं का निरीक्षण करता रहता है तथा आवश्यकतानुसार वह विद्यार्थियों को निर्देशन मार्गदर्शन एवं सहायता करता रहता है इस प्रकार यहां अध्यापक की भूमिका काफी बढ़ जाती है क्योंकी प्रत्येक विद्यार्थी का कार्य अध्यापक की सहायता से ही आगे बढ़ता है।

## प्रयोगशाला विधि के गुण :-

1. मनोवैज्ञानिक विधि -
2. शिक्षण सिद्धान्तों के अनुकूल :-
3. ज्ञान की स्पष्टता एवं स्थिरता :-
4. वैज्ञानिक विधि का प्रशिक्षण :

(vi) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त से यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है की शिक्षक और शिक्षार्थी की अन्तःक्रिया इस प्रकार हो की शिक्षार्थी के कौशलों को पूरी तरह बढ़ावा मिले वह शिक्षक पर पूरी तरह निर्भर हो कर आत्म केन्द्रित हो एवं उसके अन्दर Self confidence, प्रभावशाली व्यक्तित्व, जिज्ञासु स्वभाव का होना बने रहे।

(vii) पियाजे ने अपने सिद्धान्त में खेल की भूमिका को भी अहम माना है पियाजे का यह मानना है कि खेल के द्वारा learner के बौद्धिक स्तर को भी परिपक्वता मिलती है इस प्रकार हम देखते है कि पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है।

iii) पियाजे का सिद्धान्त यह भी बताता है कि Concrete operational stage में बालकों के अन्दर Conservation, relation, classification, Subjectivity, reversibility का समागम आ जाती है यदि इस अवस्था में शिक्षक learner के लिए अधिक सहायक हो जाते हैं तो ~~उनके~~ बच्चों की बौद्धिक क्षमता का स्तर और अधिक बढ़ जाता है और तब learner एक innovative के रूप में, एक creative के रूप में, एक discover के रूप में अपनी पहचान बनाता है।

iv) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त से यह भी पता चलता है कि जब बच्चा formal operational stage में आ जाता है तब शिक्षक के स्तर और व्यवहार से वह पूरा प्रभावित होता है और इस स्थिति में उसके चिन्तन की योग्यता, तार्किक शक्ति की योग्यता, संज्ञानात्मक विकास की परिपक्वता, कुछ नया निष्कर्ष निकालने की योग्यता, परिकल्पना की योग्यता, वैज्ञानिकता की योग्यता को काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है।